डा० विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग (AIH)
एस० एन० एस० आर० के० एस० महाविद्यालय, सहरसा
बी० एन० मंडल वि० वि०, मधेपुरा।

B.A. Part-I, Paper-I

Scanned with CamScanner

'अष्टाध्यायी' से हमें मौर्य काल के पूर्व से भारत की सम्यक राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक दशा की कुछ जानकारी मिलती है। विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस', सोमदेव के 'कथा-सरित्सागर' और क्षेमेन्द्र की 'बृहत्कथामंजरी' से मौर्य काल की कुछ घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है। किन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र के कुछ अध्यायों से मौर्य काल की शासन के आदर्श और पद्धति का पता चलता है। कामंदक के 'नीतिसार' (लगभग 400-600 ई०) से गुप्तकालीन राज्यतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है। सोमदेव सूरि का 'नीतिवाक्यामृत' (दसवीं शती ई० का अंत) 'अर्थशास्त्र' की कोटी का ही ग्रंथ है। यह ग्रंथ कौटिल्य के अर्थशास्त्र की अपेक्षा छोटा है, किन्तु इसकी रचनाशैली अधिक आकर्षक है।

पातंजलि के 'महाभाष्य' और कालिदास कृत 'मालविकाग्निमित्र' नामक नाटक से शुंग वंश के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। कालिदास के 'रघुवंश' में (जिसकी रचना कदाचित चौथी सताब्दी ई०) सम्भवतः समुद्रगुप्त की दिग्विजय की झलक मिलती है। सोमदेव के 'कथा सरित्सागर' और क्षेमेन्द्रकृत 'बृहत्कथामंजरी' में राजा विक्रमादित्य की कुछ परम्पराओं का उल्लेख है। शूद्रक के मृच्छकटिक नाटक और दंडी के दशकुमार चरित्र में [redacted] तत्कालीन समाज का सुन्दर चित्रण मिलता है।

गुप्त काल के इतिहास जानने का दो प्रमुख साधन राजकवियों द्वारा लिखे अपने संरक्षकों के जीवन चरित्र और स्थानीय इतिवृत्त हैं। जीवन चरितों में सबसे प्रसिद्ध बाणभट्ट कृत 'हर्षचरित्र' है, जिसमें हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन है। वाक्पति ने गौड़वहो में कन्नौज के शासक यशोवर्मा की और बिल्हण ने 'विक्रमांकदेव चरित' में कल्याणी के परवर्ती चालुक्य नरेश विक्रमादित्य की उपलब्धियों का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त संध्याकरनन्दी ने राम-चरित में बंगाल के शासक रामपाल की जीवन कथा लिखी है। इसी प्रकार जयसिंह ने 'कुमार पालचरित' में और

Scanned with CamScanner

हेमचन्द्र ने द्वयाश्रय काव्य में, गुजरात के शासक कुमारपाल का, पद्मगुप्त ने नव साहसांकचरित में परमार वंश का और जयानक ने 'पृथ्वीराज विजय' में पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन किया है। इन जीवन चरित्रों से तत्कालीन राजनीतिक दशा पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। परन्तु इन ग्रंथों में कुछ अतिशयोक्ति पायी जाती है। अतः इसे शुद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं कहा जा सकता।

उपलब्ध संगम साहित्य की रचना लगभग ई० की पहली दो शताब्दियों में हुई। इस तमिल साहित्य से दक्षिण भारत की तत्कालीन सामाजिक तथा आर्थिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। दक्षिण भारत में भी राजकवियों अपने संरक्षकों की उपलब्धियों का वर्णन करने के लिए कुछ जीवन चरित लिखे। इस प्रकार का एक ग्रंथ नन्दिक कलम्बकम है जिसमें पल्लव राजा नंदि वर्मा तृतीय के उपलब्धियों का वर्णन है। कलिंगतुपरणी में चोल राजा कुलोत्तुंग प्रथम का कलिंग पर आक्रमण का वर्णन है। ओट्टक्कुत्तन नामक लेखक ने तीन चोल शासकों - विक्रम चोल, कुलोत्तुंग द्वितीय और राजराज द्वितीय की उपलब्धियों का तीन-अलग-अलग ग्रंथों में वर्णन है। परन्तु इन सभी लेखक के वर्णन पूर्णतया ऐतिहासिक नहीं है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में शुद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ केवल कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' है। कल्हण ने कश्मीर के इतिहास के विषय में सभी उपलब्ध सामग्री का संग्रह करके 1149-50 ई० में इस ग्रंथ की रचना की। उसने यह ग्रंथ लिखते समय कश्मीर के शासकों का लिखित आदेशों और प्राचीन लेखकों के शासकों के जीवन चरितों का अध्ययन करके यथा सम्भव सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। किन्तु सातवीं शती ई० से पूर्व के इतिहास से संबंध उसका वर्णन पूर्णतया विश्वसनीय नहीं है। सातवीं शताब्दी ई० के बाद कश्मीर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन करने में कल्हण ने पर्याप्त सतर्कता बरती है। उसने सभी शासकों के गुण-

Scanned with CamScanner

दोष का निष्पक्ष रूप से वर्णन किया है।

गुजरात में अनेक इतिवृत्त लिखे गए। इन इतिवृत्तों में सबसे प्राचीन प्रसिद्ध रासमाला, सोमेश्वर कृत 'कीर्ति कौमुदी', अरिसिंह का सुकृत संकीर्तन, मेरुतुंग का प्रबंध चिंतामणी, राजशेखर का प्रबंध कोश, जयसिंह का हम्मीर मद मर्दन, और वस्तुपाल एवं तेजपाल प्रशस्ति, उदयप्रभु की सुकृत कीर्ति, कल्लोलिनी और बालचन्द्र का वसंतविलास है। साथ ही कुमारपाल के दो जीवन चरित कुमारपालचरित और द्व्याश्रय काव्य क्रमशः जयसिंह तथा हेमचन्द्र द्वारा लिखे गये। इनमें अनेक इतिहासिक तथ्य भरे पड़े हैं। इन ग्रंथों से गुजरात चौलुक्य शासकों के राजकाल के इतिहास पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

सिंध में भी इसी प्रकार के इतिवृत्त प्राप्त है। इसी इतिवृत्तों के आधार पर तेरहवीं शताब्दी के आरंभ में अरब लोगों ने अरबी में सिंध का इतिहास लिखा, जिसका फारसी अनुवाद चचनामा नामक पुस्तक में उपलब्ध है।

नेपाल के इतिवृत्तों में केवल वहाँ के शासकों के नामों और उनके राज्यकाल का उल्लेख है। इन वंशावलियों में पहली सदी ई० से पूर्व के शासक के नाम अनैतिहासिक प्रतीत होते हैं किन्तु उसके बाद के नाम ऐतिहासिक है।

गुजरात, नेपाल और सिंध के किसी लेखक ने अपने प्रदेशों के इतिवृत्तों का उपयोग करके उस प्रकार के ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं लिखे जैसा कि कल्हण ने राजतरंगिणी में लिखा था। इसीलिए प्राचीन भारत का यही अकेला ऐतिहासिक ग्रंथ उपलब्ध है।

प्राचीन भारतीय साहित्य प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास लिखने में बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ है किन्तु इससे तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस साहित्य की तीन बड़ी कमियां हैं। एक तो ग्रंथ विशेष की रचना की तिथि निश्चित नहीं है। दूसरे, किसी भी ग्रंथ से प्रायः इसी

प्रदेश की जानकारी मिलती है जिसमें उनकी रचना हुई थी लिखा, इन ग्रंथों की प्रतियाँ लिखने वाले विद्वानों ने बहुधा अपनी इच्छानुसार उनके पाठ में हेर-फेर कर दिया, जिससे यह पता नहीं लगता कि मूल पाठ क्या था। इतिहासकारों को साहित्यिक कृतियों का प्रयोग करते समय एक अत्यंत गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अधिकांश ग्रंथों (ब्राह्मण ग्रंथ, बौद्ध, जैन, संगम साहित्य आदि) में स्तरीकरण की समस्या को भुलाया नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद के प्रथम एवम दशम मंडल, उसी ग्रंथों के अन्य खंडों के अपेक्षा परवर्तीकालीन माने गये हैं। रामायण और महाभारत जैसे विषद महाकाव्यों की रचना सदियों तक चलती रही, अतः इन ग्रंथों को शब्दशः किसी एक विशेष काल से संबद्ध नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार बौद्ध साहित्य के जातकों में कुछ अंश एक काल के तो अन्य किसी और काल के प्रतीत होते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन से पता चलता है कि एकरूपता प्रतीत होने वाले कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में भी विभिन्न स्तर हैं। इन कमियों के बावजूद प्राचीन भारत में संबद्ध साहित्यिक स्रोतों की उपयोगिता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि उनसे राजाओं की वंशावलियों के निर्माण में सहायता नहीं मिली हो किन्तु जनजीवन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

③ <u>विदेशीय वृतांत</u> —

विदेशियों के वृतांत भी साहित्यिक साक्ष्य हैं। विदेशियों लेखक की धर्मेतर घटनाओं में विशेष रुचि थी अतः उनके वर्णनों में राजनीतिक और सामाजिक दशा पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इन लेखकों का समय प्रायः निश्चित होने से उनका वर्णन भारतीय लेखकों के वर्णन से अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। किन्तु यूनानी लेखक भारतीय परिस्थितियों तथा घटनाओं से ~~भिन्न~~ अनभिज्ञ थे। अतः उनके सभी वर्णन पूर्णतया सही नहीं है। इसी प्रकार चीनी यात्रियों के वर्णन पूर्णतया ठीक नहीं है क्योंकि वे सभी

Scanned with CamScanner

घटना का वर्णन बौद्ध दृष्टिकोण से करते थे अलबिरुनी ने भी प्राय उपलब्ध भारतीय साहित्य के आधार पर अपना ग्रंथ लिखा, अपने अनुभव के आधार पर नहीं। इन सब कमियों के बावजूद अन्य साधनों से प्राप्त साक्ष्य से विदेशियों के वर्णनों का मिलान करके उनका उपयोग प्राचीन भारतीय इतिहास लिखने में बहुत सहायक हो सकता है।

विदेशियों के वृतांतों का विवेचन तीन भागों में किया जाता है (I) यूनान और रोम के लेखक (II) चीन के लेखक (III) अरब के लेखक।

(I) यूनान और रोम के लेखक —

यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन 'हिरोडोटस' और टीसियस के वृतांत हैं सम्भवत: इन दोनों लेखकों को भारत के विषय में ईरान से ज्ञान प्राप्त हुआ था। लेकिन इनके वर्णन अधिकतर काल्पनिक है सिकन्दर के साथ भारत आने वाले लेखकों (नियार्कस, ओनेसिक्रिटस और अरिस्टोबुलस) के वर्णन इनसे अधिक महत्वपूर्ण हैं सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्णन मेगास्थनीज का है, जिसका ग्रंथ इंडिका है जो अब उपलब्ध नहीं है। लेकिन यूनान और रोम के लेखकों द्वारा इंडिका के आधार पर लिखे वर्णन उपलब्ध हैं जो बहुत उपयोगी हैं क्योंकि इनमें वे तथ्य हैं जिन्हें भारतीय लेखक कोई महत्व नहीं देते थे इनसे प्राचीन भारत के सामाजिक तथा राजनीतिक इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिलती है जैसे सिकंदर के आक्रमण की तिथि पर ही मौर्य शासकों की तिथियां निश्चित की गई है। इन लेखकों के वर्णन में भी कुछ कमियाँ हैं वे भारतीय भाषाएँ नहीं जानते थे और भारतीय संस्थाओं तथा रीति रिवाजों की जानकारी उन्हें नहीं थी जो तथ्य वे अपने आँखों से देखे थे वे पूर्ण तथा विश्वसनीय है किन्तु जो बातें उन्होंने सुनी हुई आधार पर या अनुमान से लिखा है वह विश्वसनीय नहीं है जैसे मेगास्थनीज ने लिखा है कि भारत में दास प्रथा नहीं है या भारत में सात जातियाँ हैं। किन्तु अन्य साक्ष्यों

के आधार पर ये दोनों बातें ठीक नहीं हैं। इन लेखकों के वर्णन चन्द्रगुप्त के समय की राजनीतिक घटनाओं का क्रम, सामाजिक रीति-रिवाजों और शासन प्रबंध पर अधिक प्रकाश डालते हैं।

एक अज्ञात यूनानी लेखक (जो बाद में जाकर मिस्र में जाकर रहने लगा था) का ग्रंथ 'पेरिप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी' का महत्वपूर्ण स्थान है। उसने 80 ई० के लगभग भारतीय समुद्रतट की यात्रा की। उसने अपने वर्णन में भारतीय बंदरगाहों के नाम तथा इनसे आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के नाम लिखे हैं। 'टॉलमी' ने अन्य लेखकों के वर्णन के आधार पर दूसरी शताब्दी में भारत का भौगोलिक वर्णन लिखा। अतः उसके वर्णन में अनेक भूलें हैं। किन्तु उसके वर्णन से हमें अनेक महत्वपूर्ण बातें भी मालूम होती हैं। प्लिनी ने अपना वर्णन पहली सदी ई० में लिखा। भारतीय पशुओं, पौधों तथा खनिज पदार्थों के बारे में उसका वर्णन बहुत उपयोगी है।

(ii) चीनी यात्रियों के वृतांत—

चीनी यात्रियों में सबसे महत्वपूर्ण फा-ह्यान, युवान-च्वांग और ई-चिंग के वर्णन हैं। फा-ह्यान पाँचवी सदी ई० में भारत आया था और 15 वर्ष भारत रहा। उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। अतः उसे भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति से कोई सरोकार नहीं था। युवान-च्वांग हर्ष के (राज्यकाल) समय में भारत में आया था, और 16 वर्ष भारत में रहा। उसने धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया। भारतीयों के रीति-रिवाजों और शिक्षा पद्धति पर भी युवान-च्वांग के वर्णन से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। सातवीं शताब्दी के अंत में ई-चिंग भारत आया था। वह बहुत समय तक विक्रमशीला और नालन्दा के विश्वविद्यालय में रहा। उसने बौद्ध शिक्षा संस्थाओं और भारतीयों की वेशभूषा, खान पान आदि के विषय में लिखा है।

सभी चीनी यात्री बौद्ध भिक्षु थे, इसलिए उनका दृष्टिकोण पूर्णतया धार्मिक था। फा-ह्यान और ई-चिंग ने

Scanned with CamScanner

की धार्मिक दशा का बहुत ही कम वर्णन किया है। उन्होंने अपने वर्णन में उन राजाओं के नाम भी नहीं लिखे जो उस समय भारत में राज्य कर रहे थे। युवान-च्वांग ने हर्ष, भास्करवर्मन आदि के विषय में लिखा है किन्तु इन सभी चीनी यात्रियों की बौद्ध में अटूट श्रद्धा होने के कारण वे निष्पक्ष रूप से भारत का वर्णन करने में असफल रहे। युवान-च्वांग ने लिखा है कि हर्ष महायान बौद्ध धर्म का अनुयायी था और अन्य धर्मों का आदर नहीं करता था। किन्तु अन्य साधनों से हमें ज्ञात होता है कि हर्ष ने बुद्ध की प्रतिमा के साथ-साथ सूर्य और शिव की प्रतिमाओं का भी पूजन किया था। इस प्रकार की भूल का सबसे मुख्य कारण यही था कि चीनी यात्री प्रत्येक बात को बौद्ध दृष्टिकोण से देखता था और वे विशेष रूप से भारतीय बौद्धों के ही सम्पर्क में आए।

(iii) <u>अरब यात्रियों के वृत्तांत</u> —

आठवीं शताब्दी से अरब लेखकों ने भारत के विषय में लिखना आरंभ कर दिया था। 'सुलेमान' नवीं सदी ई० के मध्य में भारत आया था। उसने पाल और प्रतीहार राजाओं के बारे में लिखा है। 'अल-मसूदी' ९१५ ई०-९१६ ई० तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है किन्तु अरब लेखकों में सबसे प्रसिद्ध 'अबूरिहान' है जिसका दूसरा नाम 'अलबिरुनी' था। वह महमूद गजनवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की संस्कृति तथा सभ्यता को पूर्णरूप से जानने का प्रयत्न किया। उसने अपने ग्रंथ 'तहकीक-उल-हिंद' में भारत का बहुत तर्क संगत और पूर्ण वर्णन लिखा है। उसके वर्णन में धार्मिक पक्षपात बिलकुल नहीं है। उसने बड़े चाव से भारतीय समाज और संस्कृति को जानने का प्रयत्न किया। परन्तु उसके वर्णन के दो प्रमुख दोष हैं - पहला यह कि उसने अपने वर्णन में भारत की राजनीतिक दशा के विषय में कुछ नहीं लिखा और दूसरा यह कि उसके वर्णन का मुख्य आधार उस समय उपलब्ध भारतीय साहित्य था। उसने निजी अनुभवों के आधार पर कुछ नहीं लिखा। अलबिरुनी ने भारतीय गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, सृष्टिशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, दर्शन, धार्मिक क्रियाओं, रीतिरिवाजों और सामाजिक विचारधारा का प्रशंसनीय वर्णन किया है।

Scanned with CamScanner